किसानों के लिए उनकी आय का जरिया बन रही गन्ने के साथ तोरिया / लाही की सहफसली खेती: गोरखपुर

स्थिति विश्लेषण/ समस्या कथन:- श्री कैलाश मौर्य, गाँव-आलमचक, ब्लॉक-कैम्पियरगंज, जिला-गोरखपुर के रहने वाले हैं। इनके पास कुल तीन एकड़ की खेती योग्य भूमि है। पहले वह एकमात्र मुख्य फसल के रूप में दो एकड़ में गन्ने की स्थानीय किस्म के साथ खेती करते थे, जिससे प्राप्त आय परिवार के भरण-पोषण के लिए अपर्याप्त था।

योजना, कार्यान्वित और समर्थन: - MGKVK के प्रसार वैज्ञानिक के संपर्क में आने पर इन्हें गन्ना (ट्रेंच विधि) के साथ सहफसली खेती के रूप में लाही (गन्ना + लाही / तोरिया) हेतु सुझाव दिया गया। केवीके ने किसान को मृदा परीक्षण के लिए प्रोत्साहित किया है और उस आधार पर किसान को गन्ने की उच्च उपज देने वाली किस्मों के साथ रासायनिक उर्वरक की संतुलित खुराक की सलाह दी गई। श्री कैलाश मौर्य द्वारा गन्ने की प्रजाति को.शा.-8279 को ट्रेंच विधि द्वारा तथा सहफसल के रूप में लाही/तोरिया की प्रजाति -पीटी 30 की पंक्तिबद्ध बुवाई दिनांक 06-09-2019 को करायी गयी तथा उर्वरक की संस्तुत मात्रा को बेसल के रूप में प्रयोग किया गया जिसमें नाइट्रोजन की आधी खुराक एसएसपी की पूरी खुराक और एमओपी की पूरी खुराक की सिफारिश की गई थी। बाकी नाइट्रोजन पहली सिंचाई के बाद इस्तेमाल किया।

आउटपुट:- श्री कैलाश मौर्य द्वारा इस तकनीकी (गन्ना + लाही) को अपनाकर एक एकड़ भूमि से लागत और आय विवरण निम्लिखित है।

क्र. स.	फसल	बीज दर / एकड़	खेती की लागत	उत्पादन (कु. / एकड़)	दर (रुपया /कु.)	सकल आय (रु.)	शुद्ध लाभ (रु.)
1.	गन्ना	30 कु.	21000	400.00	315/-	126000.00	127500.00
2.	तोरिया / लाही	2 किग्रा.		3.00	7500/-	22500.00	
योग						**148500.00**	**127500.00**

परिणाम:- श्री कैलाश मौर्य ने गन्ने की फसल को ट्रेंच विधि से बुवाई कर कुल रुपये 126000.00 /- रु के साथ 20% से अधिक उपज ली और इसके साथ छोटी अवधि (80-90 दिन) की तोरिया की सहफसली खेती से प्रति एकड़ सकल आय के रूप में रु. 22500 /- की अतिरिक्त आय वर्ष 2020 के लिए प्राप्त हुई।। इस तकनीकी के परिणाम ने कृषि समुदाय को एकमात्र फसल के अपने पुराने अभ्यास को बदलने के लिए प्रेरित किया।

प्रभाव:- श्री कैलाश मौर्य गन्ना(बुवाई की ट्रेंच विधि) + तोरिया (लाइन दिखाना) की सहफसली खेती के लोकप्रियकरण के संबंध में दूसरों के लिए प्रेरक तथा कौशल परक किसान के रूप में उभरकर आयें हैं। यह तकनीक

उन्हें आजीविका, सशक्तिकरण के लिए मदद करती है और उन्हें तिलहन उत्पादन के बारे में उत्साहित करती है। केवीके गतिविधियों का हिस्सा बनने के बाद वह प्रगतिशील किसानों में से एक है और उनको अपने स्वयं के विकास के लिए अपनी प्रभावशीलता प्राप्त करने में सहायता मिली है। श्री कैलाश मौर्य अपनी आय, आजीविका में सुधार और दूसरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करने पर बहुत खुश हैं।